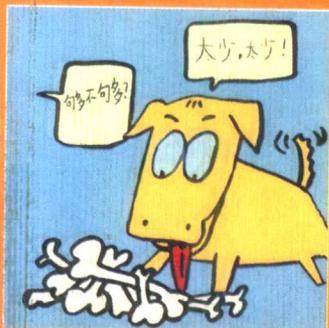


十年畅销书《中国成语故事大全》插图精选本

漫画 成语故事

上册 (A-J)

主 编 张企荣 / 副主编 吴文浩



多多益善



鹤立鸡群



报名处

江苏人民出版社

漫画 成语故事

主 编 张企荣 / 副主编 吴文浩
上册 (A-J)

江苏人民出版社

A → J

A

| | |
|------|----|
| 爱才若渴 | 2 |
| 爱屋及乌 | 4 |
| 安步当车 | 6 |
| 安然无恙 | 8 |
| 按图索骥 | 10 |

B

| | |
|--------|----|
| 八仙过海 | 12 |
| 拔苗助长 | 14 |
| 白驹过隙 | 16 |
| 百步穿杨 | 18 |
| 百发百中 | 20 |
| 百闻不如一见 | 22 |
| 败军之将 | 24 |
| 班门弄斧 | 26 |
| 抱布贸丝 | 28 |
| 抱薪救火 | 30 |
| 暴虐无道 | 32 |
| 杯弓蛇影 | 34 |
| 杯盘狼藉 | 36 |
| 杯水车薪 | 38 |
| 背水一战 | 40 |
| 奔走相告 | 42 |
| 逼上梁山 | 44 |
| 笔走龙蛇 | 46 |
| 必恭必敬 | 48 |
| 宾客盈门 | 50 |
| 宾至如归 | 52 |
| 病入膏肓 | 54 |

| | |
|-----------|----|
| 伯乐相马 | 56 |
| 博士买驴 | 58 |
| 捕风捉影 | 60 |
| 不耻下问 | 62 |
| 不敢越雷池一步 | 64 |
| 不寒而栗 | 66 |
| 不可救药 | 68 |
| 不屈不挠 | 70 |
| 不入虎穴，焉得虎子 | 72 |
| 不学无术 | 74 |
| 不遗余力 | 76 |
| 不翼而飞 | 78 |
| 不远千里 | 80 |

C

| | |
|-----------|-----|
| 沧海桑田 | 82 |
| 草菅人命 | 84 |
| 草木皆兵 | 86 |
| 差强人意 | 88 |
| 豺狼当道 | 90 |
| 长袖善舞 | 92 |
| 车水马龙 | 94 |
| 车载斗量 | 96 |
| 成也萧何，败也萧何 | 98 |
| 城门失火，殃及池鱼 | 100 |
| 乘人之危 | 102 |
| 乘兴而来 | 104 |
| 乘虚而入 | 106 |
| 程门立雪 | 108 |
| 惩一儆百 | 110 |
| 痴人说梦 | 112 |
| 赤膊上阵 | 114 |
| 赤地千里 | 116 |
| 重蹈覆辙 | 118 |

| | |
|---------|-----|
| 宠辱不惊 | 120 |
| 出尔反尔 | 122 |
| 出类拔萃 | 124 |
| 出奇制胜 | 126 |
| 楚材晋用 | 128 |
| 唇亡齿寒 | 130 |
| 此地无银三百两 | 132 |
| 从容不迫 | 134 |
| 从善如流 | 136 |

D

| | |
|------|-----|
| 打草惊蛇 | 138 |
| 大材小用 | 140 |
| 大腹便便 | 142 |
| 大功毕成 | 144 |
| 大公无私 | 146 |
| 大逆不道 | 148 |
| 大义灭亲 | 150 |
| 呆若木鸡 | 152 |
| 箪食瓢饮 | 154 |
| 当头棒喝 | 156 |
| 倒行逆施 | 158 |
| 道不拾遗 | 160 |
| 道听途说 | 162 |
| 得过且过 | 164 |
| 得陇望蜀 | 166 |
| 得心应手 | 168 |
| 得意忘形 | 170 |
| 滴水穿石 | 172 |
| 东山再起 | 174 |
| 东施效颦 | 176 |
| 动辄得咎 | 178 |
| 独当一面 | 180 |
| 独占鳌头 | 182 |

| | |
|---------|-----|
| 妒贤嫉能 | 184 |
| 对牛弹琴 | 186 |
| 对症下药 | 188 |
| 多多益善 | 190 |
| 多行不义必自毙 | 192 |
| 咄咄怪事 | 194 |

E

| | |
|------|-----|
| 尔虞我诈 | 196 |
|------|-----|

F

| | |
|--------|-----|
| 发愤忘食 | 198 |
| 罚不当罪 | 200 |
| 翻然悔悟 | 202 |
| 返老还童 | 204 |
| 方寸已乱 | 206 |
| 防微杜渐 | 208 |
| 放虎归山 | 210 |
| 分崩离析 | 212 |
| 分道扬镳 | 214 |
| 分庭抗礼 | 216 |
| 焚书坑儒 | 218 |
| 风马牛不相及 | 220 |
| 风声鹤唳 | 222 |
| 负隅顽抗 | 224 |
| 覆水难收 | 226 |

G

| | |
|------|-----|
| 肝脑涂地 | 228 |
| 感激涕零 | 230 |
| 高山流水 | 232 |
| 各自为政 | 234 |
| 功亏一篑 | 236 |
| 苟延残喘 | 238 |

| | |
|---------|-----|
| 姑息养奸 | 240 |
| 孤注一掷 | 242 |
| 顾左右而言他 | 244 |
| 刮目相看 | 246 |
| 挂羊头，卖狗肉 | 248 |
| 管中窥豹 | 250 |
| 光彩夺目 | 252 |
| 贵人多忘 | 254 |
| 过五关斩六将 | 256 |

H

| | |
|------|-----|
| 骇人听闻 | 258 |
| 害群之马 | 260 |
| 邯郸学步 | 262 |
| 汗马功劳 | 264 |
| 沆瀣一气 | 266 |
| 好好先生 | 268 |
| 好逸恶劳 | 270 |
| 合浦珠还 | 272 |
| 河东狮吼 | 274 |
| 鹤立鸡群 | 276 |
| 黑白混淆 | 278 |
| 恨相知晚 | 280 |
| 哄堂大笑 | 282 |
| 鸿鹄之志 | 284 |
| 囫囵吞枣 | 286 |
| 狐假虎威 | 288 |
| 虎口余生 | 290 |
| 画饼充饥 | 292 |
| 画龙点睛 | 294 |
| 画蛇添足 | 296 |
| 黄粱一梦 | 298 |
| 悔过自新 | 300 |
| 讳疾忌医 | 302 |

| | |
|------|-----|
| 火中取栗 | 304 |
| 祸从天降 | 306 |
| 祸起萧墙 | 308 |

J

| | |
|-----------|-----|
| 鸡鸣狗盗 | 310 |
| 鸡犬升天 | 312 |
| 急人之困 | 314 |
| 疾恶如仇 | 316 |
| 疾风劲草 | 318 |
| 集思广益 | 320 |
| 济世安民 | 322 |
| 寄人篱下 | 324 |
| 家喻户晓 | 326 |
| 假手于人 | 328 |
| 嫁祸于人 | 330 |
| 兼听则明，偏信则暗 | 332 |
| 见怪不怪 | 334 |
| 见利忘义 | 336 |
| 渐入佳境 | 338 |
| 箭在弦上 | 340 |
| 江郎才尽 | 342 |
| 交头接耳 | 344 |
| 骄兵必败 | 346 |
| 焦头烂额 | 348 |
| 狡兔三窟 | 350 |
| 揭竿而起 | 352 |
| 嗟来之食 | 354 |
| 结草衔环 | 356 |
| 竭泽而渔 | 358 |
| 捷足先登 | 360 |
| 解铃还须系铃人 | 362 |
| 金石为开 | 364 |
| 金玉其外，败絮其中 | 366 |

| | |
|------|-----|
| 金针度人 | 368 |
| 筋疲力尽 | 370 |
| 锦囊妙计 | 372 |
| 尽善尽美 | 374 |
| 尽忠报国 | 376 |
| 近水楼台 | 378 |
| 惊弓之鸟 | 380 |
| 精卫填海 | 382 |
| 井底之蛙 | 384 |
| 九牛一毛 | 386 |
| 酒池肉林 | 388 |
| 鞠躬尽瘁 | 390 |
| 举案齐眉 | 392 |
| 举棋不定 | 394 |
| 举足轻重 | 396 |
| 决不食言 | 398 |
| 绝口不提 | 400 |

K → S

K

| | |
|------|-----|
| 开天辟地 | 404 |
| 侃侃而谈 | 406 |
| 刻舟求剑 | 408 |
| 空洞无物 | 410 |
| 空中楼阁 | 412 |
| 口蜜腹剑 | 414 |
| 口若悬河 | 416 |
| 夸父逐日 | 418 |
| 脍炙人口 | 420 |

L

| | |
|------|-----|
| 滥竽充数 | 422 |
| 狼狈为奸 | 424 |
| 狼子野心 | 426 |
| 劳师袭远 | 428 |
| 老当益壮 | 430 |
| 老马识途 | 432 |
| 老生常谈 | 434 |
| 乐不思蜀 | 436 |
| 乐极生悲 | 438 |
| 离群索居 | 440 |
| 厉兵秣马 | 442 |
| 利令智昏 | 444 |
| 连城之璧 | 446 |
| 炼石补天 | 448 |
| 梁上君子 | 450 |
| 量体裁衣 | 452 |
| 两败俱伤 | 454 |
| 临渴掘井 | 456 |
| 临危不顾 | 458 |
| 令人发指 | 460 |
| 流言蜚语 | 462 |
| 柳暗花明 | 464 |
| 鹿死谁手 | 466 |
| 戮力同心 | 468 |
| 洛阳纸贵 | 470 |
| 屡见不鲜 | 472 |

M

| | |
|------|-----|
| 马革裹尸 | 474 |
| 马首是瞻 | 476 |
| 买椟还珠 | 478 |
| 满城风雨 | 480 |
| 芒刺在背 | 482 |
| 盲人摸象 | 484 |

| | |
|------|-----|
| 毛遂自荐 | 486 |
| 每况愈下 | 488 |
| 门可罗雀 | 490 |
| 门庭若市 | 492 |
| 迷途知返 | 444 |
| 名列前茅 | 496 |
| 名落孙山 | 498 |
| 明察秋毫 | 500 |
| 明珠暗投 | 502 |
| 模棱两可 | 504 |
| 磨杵成针 | 506 |
| 墨守成规 | 508 |

N

| | |
|-----------|-----|
| 南橘北枳 | 510 |
| 南柯一梦 | 512 |
| 南辕北辙 | 514 |
| 难兄难弟 | 516 |
| 鸟尽弓藏 | 518 |
| 宁为玉碎，不为瓦全 | 520 |
| 牛郎织女 | 522 |
| 弄巧成拙 | 524 |
| 怒发冲冠 | 526 |

O

| | |
|------|-----|
| 呕心沥血 | 528 |
|------|-----|

P

| | |
|---------|-----|
| 盘根错节 | 530 |
| 旁观者清 | 532 |
| 旁若无人 | 534 |
| 抛砖引玉 | 536 |
| 庖丁解牛 | 538 |
| 赔了夫人又折兵 | 540 |

| | |
|------|-----|
| 蓬头垢面 | 542 |
| 鹏程万里 | 544 |
| 披荆斩棘 | 546 |
| 疲于奔命 | 548 |
| 匹夫之勇 | 550 |
| 贫贱之交 | 552 |
| 平易近人 | 554 |
| 萍水相逢 | 556 |
| 破釜沉舟 | 558 |
| 破镜重圆 | 560 |
| 扑朔迷离 | 562 |

Q

| | |
|------|-----|
| 七步之才 | 564 |
| 欺世盗名 | 566 |
| 齐大非偶 | 568 |
| 齐人攫金 | 570 |
| 其貌不扬 | 572 |
| 奇货可居 | 574 |
| 歧路亡羊 | 576 |
| 骑虎难下 | 578 |
| 旗鼓相当 | 580 |
| 杞人忧天 | 582 |
| 起死回生 | 584 |
| 千载难逢 | 586 |
| 前车之鉴 | 588 |
| 前倨后恭 | 590 |
| 黔驴技穷 | 592 |
| 强弩之末 | 594 |
| 锲而不舍 | 596 |
| 亲痛仇快 | 598 |
| 秦晋之好 | 600 |
| 倾国倾城 | 602 |
| 请君入瓮 | 604 |

| | |
|-----------|-----|
| 庆父不死，鲁难未已 | 606 |
| 罄竹难书 | 608 |
| 秋毫无犯 | 610 |
| 趋炎附势 | 612 |
| 曲高和寡 | 614 |
| 取而代之 | 616 |

R

| | |
|------|-----|
| 人杰地灵 | 618 |
| 人面桃花 | 620 |
| 人弃我取 | 622 |
| 人人自危 | 624 |
| 人言可畏 | 626 |
| 任人唯贤 | 628 |
| 日暮途穷 | 630 |
| 日行千里 | 632 |
| 如火如荼 | 634 |
| 如鱼得水 | 636 |
| 如坐针毡 | 638 |
| 孺子可教 | 640 |
| 入木三分 | 642 |

S

| | |
|------|-----|
| 塞翁失马 | 644 |
| 三顾茅庐 | 646 |
| 三迁之教 | 648 |
| 三人成虎 | 650 |
| 丧家之犬 | 652 |
| 丧心病狂 | 654 |
| 山鸡舞镜 | 656 |
| 姗姗来迟 | 658 |
| 赏罚分明 | 660 |
| 舍本逐末 | 662 |
| 身轻言微 | 664 |

| | |
|-----------|-----|
| 身先士卒 | 666 |
| 身在曹营心在汉 | 668 |
| 深思远虑 | 670 |
| 神机妙算 | 672 |
| 甚嚣尘上 | 674 |
| 生灵涂炭 | 676 |
| 生生世世 | 678 |
| 盛名之下，其实难副 | 680 |
| 失之东隅，收之桑榆 | 682 |
| 始终不渝 | 684 |
| 世外桃源 | 686 |
| 势不两立 | 688 |
| 势如破竹 | 690 |
| 视死如归 | 692 |
| 视同儿戏 | 694 |
| 舐犊之爱 | 696 |
| 誓死不二 | 698 |
| 手不释卷 | 700 |
| 守株待兔 | 702 |
| 熟能生巧 | 704 |
| 数典忘祖 | 706 |
| 束手就擒 | 708 |
| 束之高阁 | 710 |
| 双管齐下 | 712 |
| 水落石出 | 714 |
| 水深火热 | 716 |
| 司空见惯 | 718 |
| 司马昭之心 | 720 |
| 死不瞑目 | 722 |
| 死灰复燃 | 724 |
| 死诸葛走生仲达 | 726 |
| 四面楚歌 | 728 |
| 四体不勤，五谷不分 | 730 |
| 似是而非 | 732 |

| | |
|------|-----|
| 驷马难追 | 734 |
| 素不相识 | 736 |
| 虽死犹生 | 738 |
| 随踵而至 | 740 |
| 损本逐末 | 742 |
| 损人利己 | 744 |
| 所向无敌 | 746 |

T → Z

T

| | |
|-----------|-----|
| 泰然自若 | 750 |
| 贪得无厌 | 752 |
| 贪小失大 | 754 |
| 谈何容易 | 756 |
| 谈虎色变 | 758 |
| 弹冠相庆 | 760 |
| 探囊取物 | 762 |
| 螳臂当车 | 764 |
| 螳螂捕蝉，黄雀在后 | 766 |
| 桃李不言，下自成蹊 | 768 |
| 桃李满天下 | 770 |
| 天崩地裂 | 772 |
| 天花乱坠 | 774 |
| 天经地义 | 776 |
| 天罗地网 | 778 |
| 天衣无缝 | 780 |
| 铁石心肠 | 782 |
| 铁砚磨穿 | 784 |
| 亭亭玉立 | 786 |
| 同病相怜 | 788 |
| 同仇敌忾 | 790 |

| | |
|------|-----|
| 同甘共苦 | 792 |
| 痛心疾首 | 794 |
| 投笔从戎 | 796 |
| 投鼠忌器 | 798 |
| 图穷匕见 | 800 |
| 土崩瓦解 | 802 |
| 兔死狗烹 | 804 |
| 推心置腹 | 806 |
| 唾面自干 | 808 |

W

| | |
|-----------|-----|
| 外强中干 | 810 |
| 完璧归赵 | 812 |
| 玩火自焚 | 814 |
| 玩物丧志 | 816 |
| 万全之策 | 818 |
| 万事俱备，只欠东风 | 820 |
| 万死不辞 | 822 |
| 亡命之徒 | 824 |
| 亡羊补牢 | 826 |
| 惘然若失 | 828 |
| 望尘而拜 | 830 |
| 望尘莫及 | 832 |
| 望风披靡 | 834 |
| 望梅止渴 | 836 |
| 危如累卵 | 838 |
| 危在旦夕 | 840 |
| 威武不屈 | 842 |
| 为虎作伥 | 844 |
| 未雨绸缪 | 846 |
| 畏首畏尾 | 848 |
| 闻鸡起舞 | 850 |
| 闻所未闻 | 852 |
| 刎颈之交 | 854 |

| | |
|----------|-----|
| 卧薪尝胆 | 856 |
| 握发吐哺 | 858 |
| 乌合之众 | 860 |
| 无出其右 | 862 |
| 无面目见江东父老 | 864 |
| 五色无主 | 866 |
| 物以类聚 | 868 |

X

| | |
|------|-----|
| 惜墨如金 | 870 |
| 席地而坐 | 872 |
| 洗耳恭听 | 874 |
| 喜形于色 | 876 |
| 狭路相逢 | 878 |
| 下笔成章 | 880 |
| 先发制人 | 882 |
| 先礼后兵 | 884 |
| 先声夺人 | 886 |
| 先斩后奏 | 888 |
| 相煎何急 | 890 |
| 相敬如宾 | 892 |
| 相依为命 | 894 |
| 项庄舞剑 | 896 |
| 萧规曹随 | 898 |
| 小时了了 | 900 |
| 笑里藏刀 | 902 |
| 笑容可掬 | 904 |
| 心腹之患 | 906 |
| 心旷神怡 | 908 |
| 信口雌黄 | 910 |
| 信誓旦旦 | 912 |
| 行尸走肉 | 914 |
| 幸灾乐祸 | 916 |
| 胸有成竹 | 918 |

| | |
|------|-----|
| 休戚相关 | 920 |
| 朽木粪土 | 922 |
| 虚有其表 | 924 |
| 栩栩如生 | 926 |
| 悬梁刺股 | 928 |
| 削足适履 | 930 |
| 雪窗萤几 | 932 |

Y

| | |
|------|-----|
| 言不二价 | 934 |
| 言过其实 | 936 |
| 言听计从 | 938 |
| 言笑自若 | 940 |
| 掩耳盗铃 | 942 |
| 眼中之钉 | 944 |
| 偃旗息鼓 | 946 |
| 仰人鼻息 | 948 |
| 腰缠万贯 | 950 |
| 叶公好龙 | 952 |
| 夜郎自大 | 954 |
| 一败涂地 | 956 |
| 一笔勾销 | 958 |
| 一筹莫展 | 960 |
| 一发千钧 | 962 |
| 一鼓作气 | 964 |
| 一挥而就 | 966 |
| 一见如故 | 968 |
| 一箭双雕 | 970 |
| 一举两得 | 972 |
| 一毛不拔 | 974 |
| 一鸣惊人 | 976 |
| 一诺千金 | 978 |
| 一钱不值 | 980 |
| 一窍不通 | 982 |

| | |
|-----------|------|
| 一丘之貉 | 984 |
| 一去不复返 | 986 |
| 一人得道，鸡犬升天 | 988 |
| 一日千里 | 990 |
| 一丝不苟 | 992 |
| 一厢情愿 | 994 |
| 一蟹不如一蟹 | 996 |
| 一叶障目 | 998 |
| 一意孤行 | 1000 |
| 一字之师 | 1002 |
| 疑邻盗斧 | 1004 |
| 以管窥天 | 1006 |
| 以邻为壑 | 1008 |
| 以卵击石 | 1010 |
| 以貌取人 | 1012 |
| 以身试法 | 1014 |
| 义无反顾 | 1016 |
| 羿射九日 | 1018 |
| 因势利导 | 1020 |
| 余音绕梁 | 1022 |
| 余勇可贾 | 1024 |
| 鱼目混珠 | 1026 |
| 愚公移山 | 1028 |
| 与虎谋皮 | 1030 |
| 羽毛未丰 | 1032 |
| 欲盖弥彰 | 1034 |
| 欲加之罪，何患无辞 | 1036 |
| 鹬蚌相持 | 1038 |
| 约法三章 | 1040 |
| 月里嫦娥 | 1042 |
| 月下老人 | 1044 |
| 越俎代庖 | 1046 |

Z

| | |
|---------------|------|
| 凿壁偷光 | 1048 |
| 择善而从 | 1050 |
| 沾沾自喜 | 1052 |
| 辗转反侧 | 1054 |
| 招摇过市 | 1056 |
| 昭然若揭 | 1058 |
| 朝三暮四 | 1060 |
| 郑人买履 | 1062 |
| 知难而退 | 1064 |
| 只许州官放火，不许百姓点灯 | 1066 |
| 纸上谈兵 | 1068 |
| 指鹿为马 | 1070 |
| 趾高气扬 | 1072 |
| 至死不悟 | 1074 |
| 志大才疏 | 1076 |
| 志在四方 | 1078 |
| 置之度外 | 1080 |
| 众志成城 | 1082 |
| 专横跋扈 | 1084 |
| 专心致志 | 1086 |
| 惴惴不安 | 1088 |
| 捉襟见肘 | 1090 |
| 自惭形秽 | 1092 |
| 自相矛盾 | 1094 |
| 纵虎归山 | 1096 |
| 走马看花 | 1098 |
| 醉翁之意不在酒 | 1100 |
| 作壁上观 | 1102 |
| 作法自毙 | 1104 |
| 坐观成败 | 1106 |

漫画成语故事



A



J



爱才若渴 ài cái ruò kě



注释 若：好像。渴：口渴。爱慕贤才就像口渴思饮一样。形容十分看重人才。

出处 《清史稿·列传二百九十一·王时敏》

例句 我们校长爱才若渴，引进了很多专业人才。（上海 柳悦）

近义 爱才好士 爱人好士

反义 妒贤嫉能

明末大学士王锡爵跟书画号称“江南第一”的大画家董其昌交好，他就让孙子王时敏到松江拜董其昌为师，王时敏从此书艺画技大有长进。

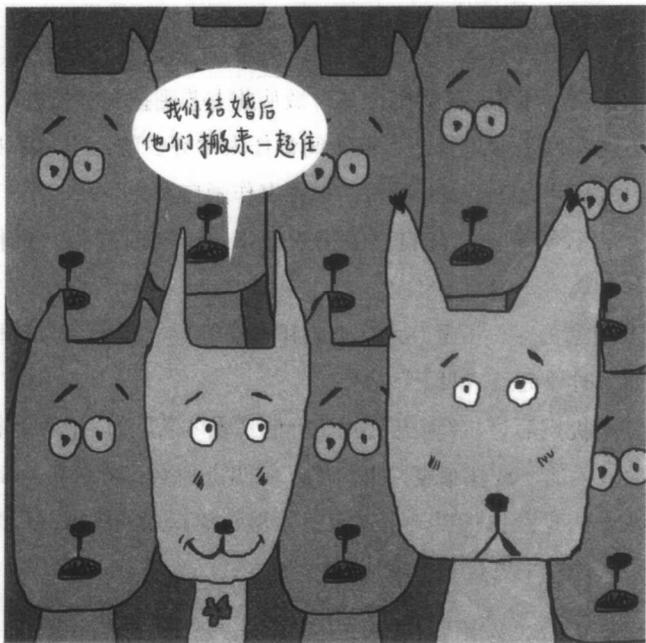
王时敏在万历年间考取进士，崇祯年间曾任太常寺少卿，不久清兵入关，明亡。王时敏从此退隐于太仓归村，以读书作画自娱。

他在书艺上，行楷师法褚遂良，隶书直追秦汉，当时誉为“近代第一”；画法尤其出众。

他和清初大画家王鉴、王翬(huī)、王原祁相继领导一代画苑，被称为“江左四王”，而王时敏更是“四王”之首。

王锡爵很注重提携后进，《清史稿》评价他“爱才若渴”。他曾经将家中收藏的名画装成巨册，放在画室、书房里，供四方画家前来观赏、临摹。只要对方有要求，必定亲自指授，不遗余力。得到他指点的画家，后来都知名于时，王翬、恽寿平更是其中翘楚。

爱屋及乌 ài wū jí wū



注释 乌：乌鸦。由于爱某个人而连带地爱护停留在他屋上的乌鸦。比喻非常喜爱某人，从而连带爱及和他有关的人或物。

出处 《尚书大传》

例句 我的同学十分喜爱球星贝克汉姆，而且爱屋及乌，也留起了贝克汉姆的发型。（上海 邵佳晶）

近义 屋乌推爱

反义 手足相残

商朝末年，周武王在军师姜太公和弟弟姬旦（周公）、姬奭（shì 召公）的辅佐下，联合诸侯，出兵讨伐纣王。由于纣王这时已经失尽人心，商朝都城朝歌很快被周军攻克，纣王自焚，商朝灭亡。

纣王死后，周武王建立了周朝。但他感到天下还没有真正安定下来，商朝的官员和百姓还没有真正归顺。于是，他召见姜太公、召公、周公三人，问他们：“我们虽然攻克了殷都朝歌，可对旧王朝的官员和百姓该怎样处置呢？”

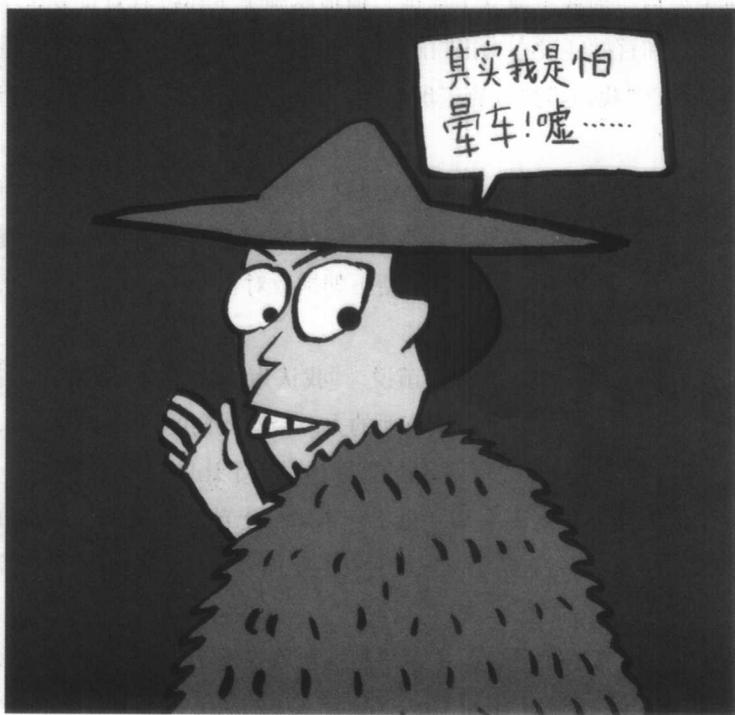
姜太公回答说：“大王，我听说过这样的话；如果喜爱那个人，就连同喜爱他屋上的乌鸦；如果不喜欢那个人，就连带厌恶他家的墙壁篱笆。这意思很明白，那就是谁对我们的新王朝抱敌对态度，那就统统杀死，一个也不留。不知大王以为如何？”

武王不赞成这样做。召公上前说：“我认为，有罪的人要全部杀掉；而没罪的不能杀，如果放纵那些有罪的人，会对我们的政权产生威胁，所以一定要全部消灭对抗我们新王朝的残余力量，不让他们东山再起。”

武王认为这样杀的人太多，也不行。周公上前说：“我看应当让所有的人回家，耕种各自的田地。大王也不要偏爱自己旧时的朋友和僚属，用仁政来感化普天下的人。”

武王采纳了周公的建议，天下果然很快就安定了下来。民心归附，西周王朝也一天比一天强大了。

安步当车 ān bù dàng chē



- 注释** 安步：慢慢地走。慢慢地步行，就当是坐车。
- 出处** 《战国策·齐策四》
- 例句** 时间还早，我们还是安步当车吧！（上海 柳悦）
- 近义** 以步代车 缓步当车
- 反义** 驷马高车